①

online class.
Date - 3/5/2020,
Time. 10:00 to 10:50 a.m.

Lecture No - 31

Topic

① Liberation.

Dr. Surita Kumari
Subject, Philosophy
B.A Part - I Paper - II (H.)
Time - 10:00 to 10:50 A.M
Date - 3/5/2020
A. H. D. College Shahpur
Patory Samastipur,
online Class.

Ans :-> जैन दर्शन के अनुसार जीव दो प्रकार के होते हैं। — (i) बद्ध (Bound) और (ii) मुक्त (Liberated)।

मुक्त जीव उन आत्माओं को कहा जाता है जिन्होंने मोक्ष को प्राप्त कर लिया है। बद्ध जीव इसके विपरीत उन आत्माओं को कहा जाता है जो बन्धन ग्रस्त हैं। बद्ध जीव का विभाजन दो प्रकार के जीवों में किया गया है। :->

(i) स्थावर (Static) (ii) त्रस (Mobile)

स्थावर जीव गतिहीन जीवों को कहा जाता है। ये जीव पृथ्वी, जल, अग्नि और वनस्पति में निवास करते हैं। इनके पास सिर्फ एक-

p.T.O.

इन्द्रियाँ है। :-> स्पर्श । त्रस (Mobile) जीव वे हैं, जो गतिशील हैं, वे निरंतरण विश्व मे भटकते रहते हैं। त्रस

जीव विभिन्न प्रकार के होते हैं। जो गतिशील हैं, वे निरंतर विश्व में भटकते रहते हैं। त्रस जीव विभिन्न प्रकार के होते हैं। कुछ त्रस जीवों को दो इन्द्रियाँ होती हैं—

जैसे :-> चींटी। कुछ त्रस जीवों को चार इन्द्रियाँ होती हैं— जैसे मर. मक्खी, मच्छर, भौंरा आदि। कुछ त्रस जीवों को पाँच इन्द्रियाँ होती हैं :-> जैसे मनुष्य, पशु और पक्षी।

जितने प्रकार के जीव की चर्चा कि गई है। जैनों के अनुसार, सभी चेतन है। परन्तु जहां तक चैतन्य की मात्रा का सम्बन्ध है। भिन्न - भिन्न कोटि के जीवों में चेतना अधिक विकसित होती है। सबसे अधिक चेतना मुक्त जीवों में होती है और सबसे कम विकसित चेतना स्थावर जीव मे।

जैन दर्शन में जीव के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण दिये गए हैं :-

(i) किसी भी वस्तु का ज्ञान उनके गुणों को देखकर होता है। उसी प्रकार हमें आत्मा के गुणों की, जैसे- चेतना, सुख, संदेश, स्मृति इत्यादि की प्रत्यक्षानुभूति होती है। इनसे इन गुणों के आधार की जाँच (इन गुणों से) प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता है। इस प्रकार

जीव के गुणों को देखकर, जीव के अस्तित्व का प्रत्यक्ष ज्ञान हो जाता है।

(ii) शरीर एक मशीन की तरह है। जिस प्रकार मशीन को चलाने के लिए एक चालक की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार शरीर रूपी मशीन को चलाने के लिए एक चेतन जीव की आवश्यकता होती है, यही आत्मा है।

(iii) आँख, नाक, कान इत्यादि इन्द्रियाँ ज्ञान के विभिन्न साधन हैं। etc

END